



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारों के विश्व शांति धाम सेवाकेन्द्र पर 'श्रीमद्भगवद्गीता' विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र. कु. अमीरचंद, महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानानंद जी, ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी जी महाराज, सिस्टर सनास कोनन, फिनलैंड, प्रो. विश्वनाथ पाटिया, मोरिसिस, प्रो. सतोहोरोकी, जापान, प्रो. जीवन बक्शी, करनाल, सिराज अहमद, अहमदिया मुस्लिम जमात इंडिया, ब्र. कु. वीणा, कर्नाटक, ब्र. कु. त्रिनाथ, हैदराबाद, ब्र. कु. राजीव व ब्र. कु. रेशमा, मुंबई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र. कु. सरोज तथा अन्य।



करनाल से. 7-हरियाणा। नेशनल इंटीग्रेशन एंड एक्टिविस्ट निफा की ओर से मंगलसेन ऑडिटोरियम में आयोजित दस दिवसीय 'हारमनी-2019' फेस्टिवल में ब्रह्माकुमारों को आमंत्रित किये जाने पर प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र. कु. प्रेम, ब्र. कु. दयाल तथा ब्र. कु. सतीश। साथ हैं निफा के चेयरमैन प्रितपाल सिंह व अन्य। इस कार्यक्रम में ग्लोबल हॉस्पिटल माउण्ट आबू से डायबिटोलॉजिस्ट ब्र. कु. डॉ. श्रीमंत साहू ने 'हेल्दी लाइफ स्टाइल एंड प्रोटेक्ट अवर फैमिली' विषय पर वर्कशॉप कराया।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

इतनी सारी घटनायें हम अखबारों में पढ़ते हैं जिसमें व्यक्ति अपराध बोध और शारीरिक दुष्कर्म जैसे घृणित कार्यों में लिप्त है। कारण इसका सिर्फ एक है, वो है मन के ऊपर चारों तरफ दिखाई देने वाले चित्रों का दुष्प्रभाव। अब ये चित्र ऐसे हमारे मन पर छप जाते हैं, जिनको निकालना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा हो जाता है। आज की सोशल मीडिया खासकर यू.ट्यूब, फेसबुक, ट्वीटर आदि इन विडियो को पोस्ट करते जिसे आज की युवा पीढ़ी ही नहीं, बुजुर्ग और यहाँ तक कि बच्चे भी बार-बार देखते हैं। इस देखने से होता क्या है कि देखने वाले उस बात को इतनी

समय प्रति समय होने वाली घटनाएं आज मानव को हर तरह से हिला कर रख देती हैं। समाज के हर एक व्यक्ति के अंदर कुछ न कुछ मानसिक रूप से विकृति आ गई है। इस विकृति का आधार क्या है? क्यों मानव आज पूरी तरह से इन विकारों के चंगुल से बाहर नहीं निकल पा रहा है? बहुत कुछ बदल रहा है, बहुत कुछ बदलने वाला है, लेकिन इस बदलने की स्थिति में एक हम हैं जो कि कुछ भी ऐसा करने को राजी नहीं हैं।

बच्चे की उम्र क्या है। वो कितना करता जाता है और देखता जाता है। अब जो चित्र बार-बार मेरे अंदर जायेगा वो वही तरंगें उत्पन्न करेगा ना! इसलिए बच्चे उन चित्रों को बार-बार देखते हैं। एक उदाहरण है, एक महिला का जो एडिक्शन का अनुभव क्या होता है वो बता रही थीं। बार-बार जो उसे भाये, उसे अट्रैक्ट करे, उसे नेट के ऊपर जाकर बार-बार देख लेना। इसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य देखने में अपने आप को इन्वॉल्व करता है। जितना वो शारीरिक रूप से सम्बंध बनाने के बावजूद एन्जॉय नहीं कर पाता, उससे कहीं अधिक वो सिर्फ देखने में एन्जॉय करता है। इसका मतलब कि देखना, सुनना अगर बंद हो जाये तो निश्चित रूप से काम विकार को जीता जा सकता है। खासकर तब देखना, जब घर में कोई नहीं है। अब ये स्थिति है। देखना ही प्रमुख रूप से व्यक्ति की मानसिक दुर्दशा का सबसे बड़ा कारण है और आज ये अपराधिक रूप ले चुका है। अगर कोई किसी को देखता है तो सिर्फ एक ही दृष्टि से, एक ही भाव से। उसके अंदर और कुछ नहीं चलता, वो यही सोचता कि ये एक स्त्री है, इसकी यही स्थिति होगी। इसलिए आज

अपराध बढ़ते जा रहे हैं। मनोवैज्ञानिक पहलू कहता है कि अगर बारह वर्ष से कम उम्र के बच्चों को इन बातों से निकाला जाए और इसके नुकसान और फायदे बताये जायें तो शायद बच्चा इन बातों से निकल जायेगा और अपनी ऊर्जा को किसी ऐसे कार्य में लगायेगा जो उसके लिए बहुत ही रचनात्मक होगा। इसलिए रचनात्मकता लाने के लिए हमें अवेयर होने की जरूरत है। और ये सिर्फ जरूरत नहीं है, बल्कि अति-अति आवश्यक है, अगर समाज को सुधारना है तो। मानसिक रूप से विकृत मानव शारीरिक रूप से कमजोर हो गया है। उसका हार्ट, उसका ब्रेन, उसका कोई भी सिस्टम ठीक से काम नहीं कर रहा है। जिसके कारण वो सबकुछ वहीं कर रहा है जो उसे नहीं करना चाहिए। इसलिए अपराधिक धरातल से निकालने के लिए व्यक्ति को आध्यात्मिक होना अति आवश्यक है। और ये मन की शक्ति ही आध्यात्मिकता के द्वारा चमत्कार करती है। और यही एक समाधान है अंतिम रूप से।



अच्छी तरह से अपने ऊपर ले जाते हैं कि उसे न वो भूलना चाहते हैं और ना औरों को भूलने देना चाहते हैं। बार बार जाकर पूछते हैं कि तुमने ये वाला विडियो देखा। और छुप के, नेट के द्वारा कहीं भी बैठकर वो विडियो देखते रहते हैं। इससे यह हुआ है कि बाल अपराध बढ़ता गया है। इसको हम ऐसे समझ सकते हैं कि जब हम कोई पॉर्न विडियो ओपन करते हैं तो उसपर लिखकर आता है कि आपकी उम्र 18 साल है या इससे अधिक है, तो आप यह विडियो देख सकते हैं। अब विडियो डालने वाले को ये थोड़े ही पता है कि उस

यह जीवन है
ये जीवन, ईश्वर का दिया हुआ एक खूबसूरत तोहफा है। परंतु हम मनुष्यों ने इस खूबसूरत तोहफे को अपनी गलत सोच, ईर्ष्या, क्रोध व द्वेष से बदसूरत बना दिया है। हम मनुष्यों का जीवन इस बदसूरत सोच में इस तरह फंस गया है कि हम लाख इसे प्यार, सहयोग और सम्मान जैसे खूबसूरत व अच्छी सोच प्रदान करें, फिर भी गलत सोच व बदसूरती रूपी अहंकार उस अच्छी सोच को धारण नहीं करती है। और यही एक मात्र कारण है कि आज हम अपना जीवन खुशी, प्यार और ज्ञान से दूर अहंकार, क्रोध और कष्ट में जीते हैं।

रख्यालों के आईने में...

जीवन में अन्य कलाओं को सीखने से पहले गिर कर उठने की कला को सीखें, क्योंकि यह कला निराशा के अंधकार को मिटा कर आशा के सूर्योदय के साथ एक नई शुरुआत करने का बल देती है।

इंसान ने वक्त से पूछा, मैं हार क्यों जाता हूँ? वक्त ने कहा, धूप हो या छांव हो, काली रात हो या बरसात हो, चाहे कितने भी बुरे हालात हों, मैं हर वक्त चलता रहता हूँ, इसीलिए मैं जीत जाता हूँ, तू भी मेरे साथ चल, कमी नहीं हारेगा... खुश रहिये, सदा मुस्कराते रहिये।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहली-06(2019-2020)

1	2	3	4	5	
6				7	
	8		9		
	10			11	12
13			14		
15	16			17	
			18	19	
	20	21		22	23
	24			25	
26				27	

- ऊपर से नीचे**
1. आत्मा...अमर अविनाशी है (3)
 2. खर्च, क्षय, ह्रास (2)
 3. बाबा का कमरा, कुटिया, शान्ति स्तम्भ, हिस्ट्री हॉल मधुबन के...हैं (4)
 4. विरुद्ध, विपक्ष (3)
 5. दिलवाड़ा मन्दिर तुम ब्राह्मणों का ही...है (4)
 8. नांव, दौनी (2)
 9. बालक सो...बनकर चलना है (3)
 12. रवानगी, कूच, प्रस्थान (3)
 13. मजबूत बांहों वाला, पराक्रमी, वीर (4)
 16. उत्साह, उल्लास (3)
 17. लगी...बस एक यही हमें तपस्या करना है (3)
 18. सम्मान, इज्जत (2)
 19. तपस्या, कठिन परिश्रम (2)
 21. प्रस्थान, कूच (2)
 23. शव वस्त्र, मृत देह पर डालने वाला कपड़ा (3)
 24. भस्म, खाक (2)
 25. योद्धा, शूर, बहादुर (2)

- बाएं से दाएं** - ब्र. कु. राजेश, शान्तिवन
1. एक को याद, कलियुग में भक्ति भी...नहीं रहती (5)
 4. नाविक, पार लगाने वाले (3)
 6. जीत, विजय (2)
 7. औषधि, इलाज (2)
 8. भक्ति मार्ग में जब बहुत...भक्ति करते हैं तब सिर काटने पर भी आ जाते हैं (2)
 9. क्षमा, रहम, दया (2)
 10. महाशत्रु है (2)
 11. रहम, दया, कृपा (3)
 14. सारा, सम्पूर्ण, समस्त (3)
 15.चला रहा है, मम्मा का मुख्य स्तंभ (4)
 17. तरंग, हिलोरे (3)
 18. हार, पराजय, असफलता (2)
 20. समझदार, कुशाग्र बुद्धि (4)
 22. बनावटी, कृत्रिम (3)
 26. मक्खन, नवनीत (3)
 27. आदेश, आज्ञा (4)